कश्मीर में स्थित बौद्ध धर्म स्मारक

डॉ. अमृता सिंह

हिमालय की गोद में समाई विश्व की अद्भुत व सुंदरतम कश्मीर घाटी को प्रकृति ने बड़ी सहजता से संवारा है, तो वहीं यह क्षेत्र आध्यात्म सम्पदा से भी भरपूर है। शैव मत, बौद्ध धर्म, इस्लाम की साँझी संस्कृति का यह क्षेत्र मिश्रित संस्कृति के विभिन्न आयामों से रू-ब-रू करवाता है। धर्म, दर्शन, साहित्य और ज्ञान की भूमि रही कश्मीर घाटी को ऋषि भूमि या शारदा पीठ भी कहा जाता था। विद्या की देवी माता शारदा की भूमि कश्मीर के संदर्भ में कहा जाता है कि जब प्राचीन काल में बच्चे की विद्या आरंभ की जाती थी तो बच्चे को कश्मीर की ओर मुँह कराकर बिठाया जाता था। इस संदर्भ में एक प्रसिद्ध श्लोक है "नमस्ते शारदे देवि कश्मीरपुर वासिनी, त्वामहं प्रार्थये नित्यं विद्यादानं च देहि में।"[1] अर्थात कश्मीर में विराजने वाली माँ शारदा, आप हमें विद्या का दान दें। बौद्ध संस्कृति का कश्मीर से गहरा संबंध है। बौद्ध धर्म शास्त्रीय कश्मीरी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण भाग था जिसका वर्णन कल्हण द्वारा रचित राजतरंगिनी तथा नीलनाग के उपासकों के ग्रन्थ नीलमाता पुराण में मिलता है। राजतरंगिनी में कल्हण कश्मीर की अजय शक्ति पर गर्व करते हुए लिखते हैं "कश्मीर पर बल द्वारा नहीं केवल पुण्य द्वारा विजय प्राप्त की जा सकती है। वहाँ के निवासी केवल परलोक से भयभीत होते हैं, न कि शस्त्रधारियों से।"[2]

कश्मीर, ऐतिहासिक रूप से बौद्ध धर्म का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। कश्मीर में बौद्ध धर्म की उत्पत्ति का श्रेय मज्जांतिका नामक भिक्षु को जाता है, जिन्हें तीसरी बौद्ध परिषद के समापन पश्चात सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रसार हेतु कश्मीर तथा गांधार भेजा था। कश्मीर में बौद्ध धर्म व्यापक रूप से मौर्य सम्राट अशोक के समय में फैला, किन्तु इस धर्म के अनुयायी सुरेन्द्र नामक कश्मीर के प्रथम बौद्ध शासक के समय में भी थे। कश्मीर में बौद्ध धर्म का पुनरुत्थान कुषाण काल के राजा कनिष्क के शासनकाल में हुआ। इस समय को कश्मीर में बौद्ध धर्म का स्वर्ण युग माना जाता है। कुषाण शासन काल में कश्मीर बौद्ध शिक्षा का उच्च केंद्र बना, जो बौद्ध मिशनरियों हेतु महत्वपूर्ण मध्यस्थ था। 'द मेकिंग ऑफ अर्ली कश्मीर : इंटरकल्चरल नेटवर्क्स एण्ड आइडेंटिटी फॉर्मेशन' में मुहम्मद अशरफ वानी और अमन अशरफ वानी लिखते हैं "इस अवधि (तीसरी शताब्दी सीई से छठी शताब्दी सीई) में कश्मीर से चीन जाने वाले बौद्ध विद्वानों की संख्या भारत के अन्य हिस्सों से जाने वालों की तुलना में बड़ी है।"[3] कनिष्क के शासनकाल में ही चौथी बौद्ध संगीति का आयोजन कश्मीर के कुंडलवन में हुआ, जिसका मुख्य उद्देश्य सर्वास्तिवाद को व्यापक आधार प्रदान करवाना था। कल्हण ने राजतरंगिनी में सदरहद्वन की पहचान हरवन के रूप में की है जो कश्मीर में बौद्ध धर्म के महत्व को प्रमाणित करता है। इस परिषद की अध्यक्षता वसुमित्र ने की थी जबकि अश्वघोष इसके उपाध्यक्ष थे। इसी परिषद में बौद्ध धर्म दो संप्रदायों- महायान तथा हीनयान में विभाजित किया गया। इस संगीति में त्रिपिटक (प्राचीनतम ग्रन्थ

जिसमें भगवान बुद्ध के उपदेश संग्रहीत हैं) का पुनः संकलन व संस्करण हुआ। कश्मीर में आयोजित परिषद के समापन पश्चात भी बौद्ध धर्म के अनुयायी तथा प्रतिष्ठित बौद्ध भिक्षु मध्य एशिया, चीन, तिब्बत तथा भारत के अन्य क्षेत्रों से यहाँ आते रहे। कश्मीर में आयोजित चतुर्थ बौद्ध परिषद के तथ्य को प्रमाणित करते हुए ह्वेन त्सांग, बु स्टोन तथा तरंथा के कथनानुसार "विभिन्न सम्प्रदायों द्वारा विश्वास की विभिन्न व्याख्याओं को समेटने के लिए जो परिषद बुलाई गई थी, जिसमें 500 अर्हत, 500 बोधिसत्व और 500 पंडितों ने भाग लिया था।"[4] अशोक के उत्तराधिकारी जलौका (जिसे जलुका नाम दे भी जाना जाता है) कश्मीर के सक्रिय और प्रतिष्ठित राजा के शासनकाल के समय बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार अस्थायी रूप से थम गया किन्तु कुछ समय पश्चात ये धीरे-धीरे पुनः विकसित हुआ। कश्मीर में धर्म के प्रचलन हेतु राजा सुरेन्द्र ने नरेन्द्रभवन नामक विहार (जो कि ज़ोजीला से दूर सौरका शहर में था) तथा एक अन्य विहार (सौसारा, अंचार झील के पास स्थित सौरा) का निर्माण किया। अपने शासन काल में धर्मनिष्ठ बौद्ध राजा अशोक ने शुष्कलेत्र और वितस्तात्र नामक दो स्थानों पर कई स्तूपों का निर्माण करवाया। अशोक का उत्तराधिकारी जलौका जो कि वास्तव में शैव भक्त था ने भी बौद्ध धर्म से प्रभावित हो वराहमूला (बारामुला) के आसपास के क्षेत्र में कृतिश्रमविहार नामक एक बड़े विहार का निर्माण किया। राजा मेघवाहन के समय कश्मीर में कई बड़े बौद्ध-स्तूपों का निर्माण कराया गया। घाटी में बौद्ध धर्म को विकसित और सशक्त करने के लिए कुषाण साम्राज्य के शासकों ने भी कई मठों, चैत्यों तथा अन्य बौद्ध नीवों की स्थापना की। इनके अतिरिक्त कश्मीर में सोपोर ज़िले में जालुर जैनगीर, वितस्त्र और अनंतनाग ज़िले में व्याथावोतुर नामक जलोरा विहार तथा वर्तमान बडगाम में एक स्तूप शामिल है। कश्मीर के इतिहासकार कल्हण अभिलेखबद्ध करते हैं "अशोक ने बड़ी संख्या में स्तूप और शिव के कुछ अहाने के अतिरिक्त श्रीनगरी शहर का निर्माण किया था, जिनमें से दो राजा के नाम पर 'अशोकेश्वर' कहे जाते हैं।"[5]

बारामूला में उशकुरा के खंडहर, ललितादित्य द्वारा बनवाए गए स्तूप का प्रतिनिधित्व करते हैं, तो वहीं परिहसपोरा में तीन बौद्ध इमारतें- एक स्तूप, मंदिर तथा मठ जिसे ललितादित्य का राज-विहार माना जाता है प्राप्त हुए। बारामुला ज़िले के पट्टन तहसील में स्थित परिहसपोरा का राजविहार बौद्ध चैत्य का एकमात्र जीवित उदाहरण के रूप में सुरक्षित है। परिहसपोरा, जो स्थानीय रूप से 'कानी शहर' नाम से जाना जाता है को कश्मीर की प्राचीन राजधानी माना जाता है। यह शहर राजा ललितादित्य मुक्तापिडा द्वारा झेलम नदी के ऊपर एक पठार पर निर्मित किया गया था। बौद्ध धर्म के अनुयायी राजा ललितादित्य ने परिहसपोरा में बुद्ध की 50 मीटर लंबी मूर्ति के अतिरिक्त विहार भी बनवाए। इतिहासकार व कवि ज़रीफ़ अहमद ज़रीफ़ ने राइज़िंग कश्मीर से की गई बातचीत में बताया कि "उन्होंने धार्मिक स्थलों का निर्माण और जीर्णोद्धार कराया। उन्होंने घाटी में 350 विहार सहित सिंचाई नहरें भी बनवाईं, जहाँ बौद्ध प्रार्थना करते थे।"[6] अतः यह कहना असंगत न होगा कि छोटा सा यह शहर अपने असामान्य पुरातात्विक स्मारकों के लिए जाना जाता है।

श्रीनगर में स्थित विश्व प्रसिद्ध बौद्ध स्थल हारवन बौद्ध स्तूप की खोज सर अर्ल स्टेन ने की थी। इस स्थल की खुदाई के दौरान बौद्ध स्तूप मिले हैं। संरक्षित स्मारक घोषित किए गए इस बौद्ध स्थल की देखरेख अब भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण कर रहा है। आर. सी. काक अपनी पुस्तक 'Ancient Monuments of Kashmir' में लिखते हैं "While digging under its foundations a copper coin of Toramana, the White Hun ruler, who flourished in about the fifth century CE. It was inferred that the diaper rubber stupa could not possibly be earlier than the 5th century CE thought it might be considered later in the date."[7]

अतः कहा जा सकता है कि बौद्ध धर्म समूचे एशिया को आप्लावित कर यूरोप तक जा पहुंचा। बुद्ध से जुड़े अवशेषों, स्मारकों, मठों आदि की खोज विश्व भर में निरंतर जारी है, क्योंकि विश्व भर में सभी देशों में खुदाई से बुद्ध अवशेष प्राप्त हुए हैं, जो इस कहावत को सशक्त करते हैं 'हुआ युद्ध निकले बुद्ध।' विद्या की देवी शारदा व कश्यप ऋषि का निवास स्थान कश्मीर बौद्ध धर्म का केंद्र भी रहा है। कल्हण की राजतरंगिनी कश्मीर में बौद्ध धर्म के महत्व के प्रमाण प्रस्तुत करती है, तो वहीं चीनी यात्री ह्वेन त्सांग ने भी अपने विवरण में घाटी में बौद्ध धर्म के प्रसार का उल्लेख किया है।

संदर्भ सूची-

१. कण, पाथेय. कश्यप ऋषि का कश्मीर सदियों तक रहा हिन्दू तथा बौद्ध धर्म केंद्र, patheykan.com..ऋषि कश्यप/

२. रैना, शिबन कृष्ण .*कल्हण और उनकी राजतरंगिनी* ,punjabkesari.in,https//:m.punjabkesari.in/aapki-kalam-se /news/kalhan-and-his-royal-lady

३. मीर ,शाकिर .*पुस्तक समीक्ष: द मेकिंग ऑफ़ अर्ली कश्मीर* www.outlookindia.com

४. *कश्मीर में बौद्ध धर्म* ,India Netzone, www.indianetzone.com

५. Kalhan –the historian of Kashmir ,records that Ashoka built the town of Srinagari besides a large number of stupas and some shrines to siva ,two of which were called Ashokesvara after the king. Lipika Singh ,*The World of Buddhism (Vol.II)* ,pg. 185

६. *Parishaspora: The forgotten capital of Kashmir* ,Rising Kashmir , https//:risingkashmir.com

७. Shah.Manan ,*A Buddhist Monastery of Kashmir Buried in the Past* , www.inversejournal.com

८. गैरोल ,वाचस्पति .*संस्कृत साहित्य का इतिहास*

९. गोयल ,प्रीतिप्रभा .*भारतीय संस्कृति*